जनकभूमि की परिक्रमा

रवि संगम

जनकभूमि की परिक्रमा जगज्जननी जानकी के प्रति जन-सामान्य की आस्था को प्रकट करती है। यहाँ वर्तमान में प्रचलित जनकपुर परिक्रमा पथ का विवरण दिया गया है।

मिथिला-माहात्म्य में तीन परिक्रमा मार्गों का वर्णन आया है. लघुपरिक्रमा, मध्यम परिक्रमा एवं बृहत् परिक्रमा। लघु परिक्रमा में केवल जनकपुर धाम की परिक्रमा होती है। मध्यम परिक्रमा में राजा जनक की पूरी राजधानी की परिक्रमा मानी जाती है तथा बृहत् परिक्रमा में सम्पूर्ण मिथिला की परिक्रमा होती है।

मध्यम परिक्रमा

वर्तमान में 'मध्यम परिक्रमा' फरवरी-मार्च महीने में बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। हजारों की संख्या में साधु-संतों एवं श्रद्धालुओं का पूरा दल भजन-कीर्तन करते हुए पैदल यात्रा करते हैं। यह परिक्रमा 5 दिनों में पूर्ण होती है। 1880 ई. के आसपास प्रकाशित पुस्तक 'मिथिलातीर्थप्रकाश' के अनुसार मध्यम परिक्रमा कल्याणेश्वर से आरम्भ होती थी तथा गिरिजास्थान, जलेश्वर, क्षीरेश्वर एवं धनुषा होती हुई पुनः कल्याणेश्वर में सम्पन्न होती थी। उक्त पुस्तक के लेखक ने अपने समय में भी इसके प्रचलन की बात कही है।

वर्तमान में मिथिला परिक्रमा फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की पहला तिथि से आरम्भ होकर पूर्णिमा तिथि तक 15 दिनों की होती है। नेपाल स्थित धनुषा जिला के मिथिलाविहारी मन्दिर, कचूरी में स्थापित राम-जानकी का रथ रामजानकी मन्दिर,

पेशा से पत्रकार एवं बिहार में पर्यटन-सूचना सामग्रियों के प्रामाणिक लेखक।

जनकपुर तक लाया जाता है. रामजानकी मन्दिर, जनकपुर के परिसर में अन्य सभी मन्दिर के रथ भी लाये जाते हैं तथा वहीं से यह यात्रा प्रारम्भ होती है। नेपाल एवं भारत के विभिन्न मन्दिर पुण्यक्षेत्रों से गुजरती हुई यह यात्रा फाल्गुन की पूर्णिमा को जनकपुर में समाप्त होती है. वर्तमान में परिक्रमा मार्ग के पड़ावों में 'चार पड़ाव' बिहार में हैं।

मिथिला परिक्रमा में मिथिला बिहारीजी का डोला फाल्गुन मास के शुक्लपक्ष के प्रथम दिन नेपाल में जनकपुर कचुरी धाम से शुरू होती है. वहां से चलकर रत्नसागर में भोजन-विश्राम कर, जानकी मन्दिर में पूजा करते हुए कचूरी स्थित हनुमानगढी (जनकपुर से 3 कि.मी.) में रात्रि-विश्राम किया जाता है।

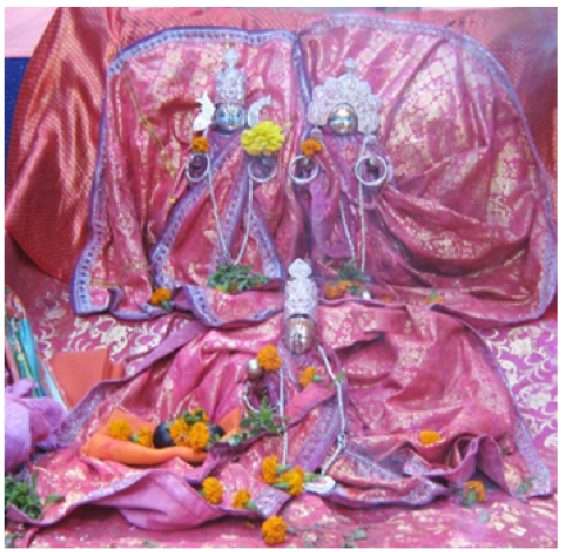

डोली के अंदर श्रीसीताजी की प्रतिमा

अगले दिन भगवानजी की आरती के बाद हरिणे ग्राम (भारत -नेपाल सीमा पर स्थित) में बालभोग विश्राम कर हरलाखी होते हुए वासोपट्टी-हरलाखी मार्ग पर वासोपट्टी से 2 कि.मी. की दूरी पर स्थित कल्याणेश्वर स्थान महादेव मन्दिर, कलना पहुंचती है। वहां से अगले दिन गिरिजा-स्थान, फुलहर पहुंचती है।

अगले दिन नेपाल के मटिहानी पहुंचती है। फिर अगले दिन नेपाल स्थित जलेश्वर स्थान, मरई स्थान, धुर्वकुंड, कंचनवन, पर्वता (परवत्ता) धनुषाग्राम, खतोखार व औराही होते हुए

पुनः बिहार के हरलाखी प्रखंड के करुणा स्थान पहुंचती है. यह स्थान हरलाखी व विशौल से 5 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

वहां से अगले दिन कल्याणेश्वर स्थान में संकल्प के साथ परिक्रमा पूरा करके विश्वामित्र आश्रम विशौल में विश्राम किया जाता है।

वहां से परिक्रमा यात्रा नेपाल के जनकपुर धाम के पांचकोशी परिक्रमा किया जाता है. पंचकोशी परिक्रमा के साथ 15 दिवसीय यह यात्रा संपन्न हो जाती है. 15 दिनों में 15 पवित्र देवस्थलों का दर्शन कर भक्तजन पुण्यलाभ अर्जित करते हैं।

आस्था है कि मिथिला परिक्रमा में मिथिला बिहारी का डोला के साथ श्रद्धालु 84 लाख योनियों से उद्धार पाने के लिए 84 कोस की मिथिला परिक्रमा करते हैं।

***

परिक्रमा पथ में कलश-यात्रा की मनोहारी छवि

विश्वामित्र आश्रम, बिसौल में विश्वामित्र की प्रतिमा

कल्याणेश्वर शिवमन्दिर, कलना का बाहरी दृश्य